Work Chapter, Nanded.

ورک چاپٹر

ورک چاپٹر، ناندیڑ۔(مہاراشٹر)

Proposed topics to be covered in the Workshop and their tentative duration in hours.

دعوتی ورکشاپ کے دوران مندرجہ ذیل عنوانات پر روشنی ڈالی جائے گی۔

- **The only alternative (2 hr)**
- **Principal of Dawah (1:30 hr)**
- **Principal of Hikmat (4hr)**
- **Sanatan scripture (2:30 hr)**
- **Hindu sects (4 hr)**
- **Toheed (3 hr)**
- **Aakhirat (3hr)**
- **Rissalat (3 hr)**
- **FAQ (3 hr)**

- صرف ایک راستہ (2 hrs)
- دعوت کے اصول (1.5 hrs)
- دعوت کی حکمت (4 hrs)
- سناتن دھرم کی مقدس کتابیں (2.5 hrs)
- ہندو مذہب کے مختلف فرقے (4 hrs)
- توحید (3 hrs)
- آخرت (3 hrs)
- رسالت (3 hrs)
- سوال جواب (3 hrs)

Total 26 Hours

کل 26 گھنٹے

For any queries in future,
Please contact on below details.

کسی بھی قسم کے سوال یا تجاویز کیلئے رابطہ کریں۔

Awais Ansari	: **8087609976**	:	اویس انصاری
Khizar Hayat	: **9881109889**	:	خضر حیات
Asad Sir	: **9960561864**	:	اسد سر
Dayee Abdul Hai	: **9960475568**	:	داعی عبدالحی
Dayee Ashfaq	: **9960889563**	:	داعی اشفاق
Dayee Md. Amjad	: **7020226690**	:	داعی محمد امجد
A. Razzak Inamdar	: **9970707286**	:	عبدالرزاق سر
A. Waheed Khaled	: **9970150440**	:	عبدالوحید خالد

آرگنائیزر : رجوع الی القرآن وسنّہ

Priority based Mad’oos to be targetted

1. _____

2. _____

3. _____

4. _____

5. _____

6. _____

7. _____

8. _____

9. _____

10. _____

दीन की दावत के सिद्धान्त

१) दावत सुनियोजित हो । उचित साहित्य की तैयारी ।
२) दावत को किसी विशेष प्रणाली में न बाँधें ।
३) मदऊ (जिसे दावत दें उस) के अनुकूल दावत का तरीका।
४) समान आधारों से शुरु करें ।
५) वहदते दीन (धर्म सदा एक रहा) और वहदते अदयान (सभी धर्म समान है) में अन्तर का ध्यान रहे ।
६) मदऊ की सहन शक्ति के अनुसार धीरे धीरे दावत ।
७) सामान्य क्रम ।
८) मदऊ के अनुकूल क्रम ।
९) मदऊ को जानी पहचानी बात महसूस हो ।
१०) स्वभाव की अनुकूलता का लिहाज ।
११) मदऊ की लिसान (भाषा–संस्कृति) का लिहाज ।
१२) मदऊ के मांसिक स्तर का लिहाज ।
१३) दाई (दावत देने वाले) की योग्यता के अनुसार मदऊ का चयन।
१४) आसान वर्ग का चयन ।
१५) दाई में मसलक की उदारता ।
१६) मदऊ को सरल निर्देश दें ।
१७) दाई में स्वभाकि धर्म की समझ ।
१८) मदऊ की मान्यताओं का ज्ञान ।
१९) मदऊ के पवित्र ग्रंथों का प्रयोग ।
२०) दाई की तैयारी (वर्तमान और अतीत की गलतफहमियों व आपत्तियों का ज्ञान ।
२१) धार्मिक अहंकार के टकराओ से बचें ।
२२) जातीय व कौमी अहंकार के टकराओ से बचें ।
२३) धार्मिक व क्षेत्रीय सभ्यता में अन्तर समझें ।
२४) गलतफहमियाँ दूर करें, गलतियों का इकरार करें ।
२५) शास्त्रार्थ से बचें ।
२६) इस्लाम के एलान पर जोर न दें ।
२७) गैर अहम (महत्व हीन) और संवेदनशील मुद्दों से बच कर निकलें ।

دعوت دین کے اصول

۱۔ دعوت کی منصوبہ بندی، مناسب لٹریچر کی فراہمی۔
۲۔ دعوت کو کسی مخصوص، نہج، اسلوب یا طریق کار میں مقید نہ کریں۔
۳۔ مدعو کے اعتبار سے طریق دعوت کا انتخاب۔
۴۔ مشترک بنیادوں سے ابتداء۔
۵۔ وحدت دین کی دعوت وحدت ادیان سے حفاظت کا خیال رہے۔
۶۔ مدعو کی قوت برداشت کے مطابق تدریجاً دعوت۔
۷۔ عمومی ترتیب۔
۸۔ مخاطب کے حسب حال دعوتی ترتیب۔
۹۔ معروف طریقے سے امر بالمعروف۔
۱۰۔ مزاجوں کی مناسبت کا لحاظ۔
۱۱۔ مدعو اقوام کی (لسان) زبان کا استعمال۔
۱۲۔ مدعو کی ذہنی استعداد کا لحاظ۔
۱۳۔ داعی کی استعداد کے مطابق مدعو کا انتخاب۔
۱۴۔ آسان گروپ کا انتخاب۔
۱۵۔ داعی گروہ میں مسلکی وسعت۔
۱۶۔ مدعو کے ایڈجسٹمنٹ واس کے جوابات میں وسعت (آسان باتوں کا حکم)
۱۷۔ دین فطرت کا فہم (بہت سی دلیلیں ہم ان کو سمجھا سکتے ہیں کیونکہ ہم ہی نے غلط سمجھا ہے)
۱۸۔ مخاطب کا علم۔
۱۹۔ مدعو قوم کی کتابوں کا استعمال۔
۲۰۔ داعی کی تیاری (عمومی اور دور حاضر کی غلط فہمیوں اور اعتراضات کا علم)
۲۱۔ مذہبی انا (Ego) سے ٹکراؤ نہ ہو۔ (لانفرق بین احد من...)
۲۲۔ نسلی اور قومی تفاخر سے بچیں۔ (Allegiance Factor)
۲۳۔ مذہبی اور علاقائی تہذیب میں فرق کو سمجھنا۔
۲۴۔ غلط فہمیوں کا ازالہ اور غلطیوں کا اعتراف۔
۲۵۔ مناظرے سے اجتناب کریں۔
۲۶۔ قبول اسلام پر مجبور نہ کریں۔
۲۷۔ غیر اہم اور حساس نکات کو ٹالتے ہوئے حکمت کی راہ اختیار کریں۔

२८. नकारात्मक रवैय के बजाय सकारात्मक दावत ।	۲۸۔ منفی رویئے سے بچتے ہوئے مثبت دعوت (نسلی منافرت نہ پیدا کریں)
२९. ऊँचे वर्गों की अहमियत की उपेक्षा न करें ।	۲۹۔ اونچے طبقات کی اہمیت کو نظر انداز نہ کریں۔
३०. केंद्रीय क्षेत्रों की अहमियत ।	۳۰۔ اہم المرکزی کی اہمیت۔
३१. संपर्क और संबंध ।	۳۱۔ روابط۔ انفرادی، تنظیموں سے، مساجد میں، لائبریں، انتظامیہ اور پولیس، منصوبہ بند روابط، اچانک اور فطری رابطے، قرآن دوستی سے منع نہیں کرتا۔
३२. मदऊ कोम की समस्याओं में रुचि, भलाई में सहयोग।	۳۲۔ مدعو اقوام کے مسائل میں دلچسپی، (تعاونوا علی البر)
३३. हल्के हों या भारी, हर हाल में निकलें ।	۳۳۔ جس حال میں ہو، اللہ کی راہ میں نکلو۔
३४. आधुनिक साधनों का प्रयोग ।	۳۴۔ جدید ذرائع کا استعمال۔
३५. मुस्लिम मुहल्लों में वास या मिली जुली आबादी में ।	۳۵۔ اپنے رہائشی علاقے یا ان کی بستیوں میں نفوذ؟
३६. दीनी सीमाओं में संविधान का आदर और देश प्रेम।	۳۶۔ دینی حدود میں ملکی قوانین کا احترام۔ وطن سے محبت، خود فتنہ نہ بنیں۔
३७. मुस्लिम सामूहिक मुद्दों में गैर मुस्लिमों से सहयोग लें।	۳۷۔ ملی اجتماعی مسائل میں غیر مسلموں کو شامل کریں۔
३८. मायूस न हों, धैर्य रखें, नजर अन्दाज करें ।	۳۸۔ مایوس نہ ہوں۔ صبر و ضبط، عفو و درگزر، اعراض۔
३९. चरित्र, अखलाक, मन व तन की पाकी ।	۳۹۔ کردار، حسن اخلاق حسن سلوک، من اور تن کی پاکی۔
४०. अल्लाह से तअल्लुक, दुआ तहज्जुद ।	۴۰۔ تعلق مع اللہ، دعا، تہجد۔

Time Cycle of Brahma Kumari

समय चक्र ब्रह्माकुमारी

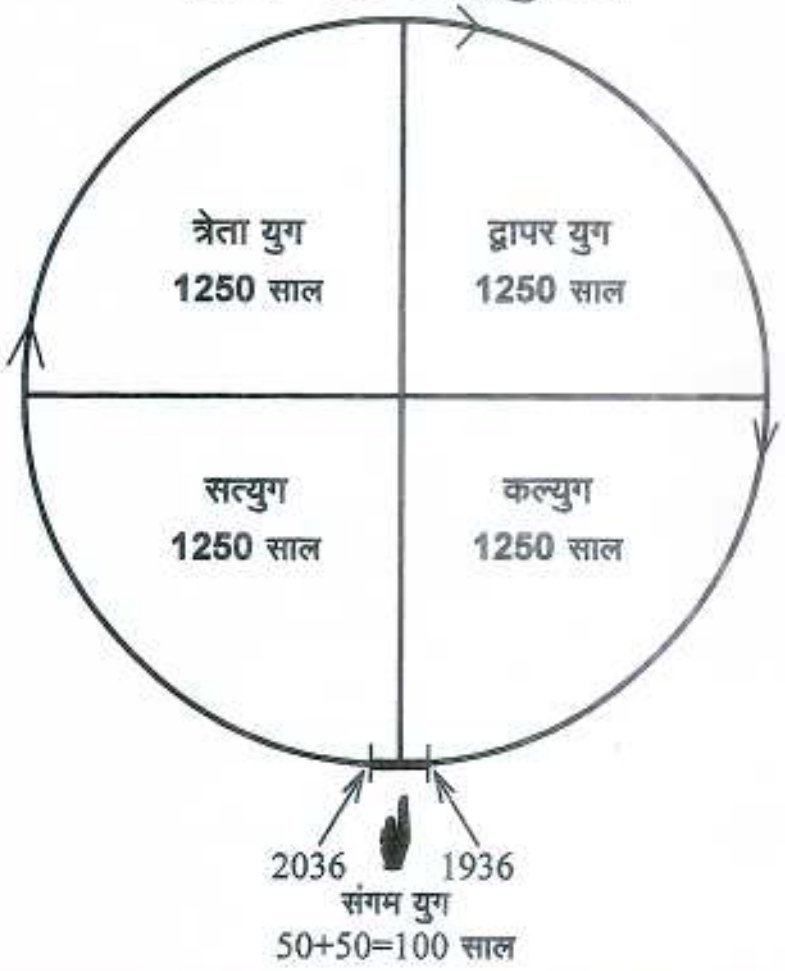

भूमिका

भविष्य पुराण जैसाकी ईसके नाम से ध्वनित होता की भावी घटनाआं के संदर्भ मे अपेक्षाकृत अधिक भाग सेने वाला है । वहसे तो इसमे भी पुराण के पाँचो लक्षणो का आरंभ मं है। निर्देश कर दिया गया है और सदनुसार संग, प्रतिसंग, दश, मन्वन्तर और वंशातुच का नियमानुसार सभी प्रकार अणंत किया गया है । पर लोर्गी में यह भावी घटनाओं की विषमता के कारण ही अधिक भावी घटनाये कर्हा से आई और उससा क्या उपयोग है, ससंसे पहले कई बार स्पष्ट कर चुके है, पुराण निर्माण अल्पशिक्षित या अशिक्षित समुदायको धर्म, ज्ञान, नीनि, चरित्र, मर्यादा, सबव्यवहार सम्बन्धी प्रेरणाये प्रदान करने के निमित्त किया गया है। जिन लोगों को सामाजिक या आर्थिक कारणों से न तो पढने–लिखने का अवसर मिलता है और न जो उच्च लोगो के सत्संग का लाभ ही प्राप्त कर सकते है, उनके लिए सद्प्रेरणा प्रप्त करने का एक–मात्र मार्ग इसप्रकार की धार्मिक क्रयायें श्रवण करना ही होता है। विशेषतया सत्यकाल में, व्यवसायपर अधिक जोर दिया जाता था और चतुर्थ वणं वालो को श्रृति के अत्यगंत आने वाला समस्त जीवनो–पयोगी साहित्य पर सबसे प्रथवा ≈≈≈≈

भवन्ति द्विण शादू लघू तानि भुवनवये
विशेषत चतुर्थस्तवर्णास्य द्विज सत्तम ।।३५

भविष्य पुराण भूमिका
(पं. श्रीराम शर्मा आचार्य)

पुराण साहित्य तर्क अथवा प्रमाण द्वारा जांचने का विषय नही है । इसका निर्माण अल्पशिक्षित या अशिक्षित समुदाय को धर्म, ज्ञान, नीति, चरित्र, मर्यादा सदव्यवहार संबंधी प्रेरणाएं प्रदान करने के निमित्त किया गया है ।

मध्य काल में जब वर्ण व्यवस्था पर अधिक जोर दिया जाता था और चतुर्थ वर्ण वालों को श्रृति के अन्तर्गत आने वाला समस्त जीवनोपयोगी साहित्य पढ सकने अथवा सुन सकने का भी द्वार बन्द कर दिया गया था, उस निम्नन वर्ग के हितार्थ पुराण साहित्य की रचना की गई थी ।

धार्मिक ग्रंथ (सनातन धर्म)

श्रुति : (तफसील अलग **Page** पर है) (شروتی:(تفصیل الگ صفحہ پر ہے۔)

स्मृति : (यह सनातन धर्म की फिक्ह जैसी है । स्मृतियाँ 18 हैं । इन में केवल **2,** याजनवल्क्य स्मृति का कभी कभी और मनु स्मृति का अधिकतर प्रयोग होता है । मनु स्मृति में वर्णाश्रम धर्म (जात पात) पर बहुत जोर है । संविधान ने हिंदू धर्म की व्याख्या के लिये इसे प्रमाणिक माना है । दलित इसके कडे विरोधी हैं ।

इतिहास : रामायण (वाल्मीकी) और महाभारत (वेद व्यास)

काण्ड **7** کانڈ		पर्व **18** پرو	
अध्याय ادھیائے		अध्याय ادھیائے	
श्लोक **6,680** شلوک	⇨**24,000**	श्लोक **8,800**	⇨**24,000**
(वाल्मिकी रामायण)	(तुलसीदासजी)		⇨**100,000 (Approx)**

पुराण : बहुत हैं । **18** प्रमाणिक माने जाते हैं ।

१. श्रीमद्भागवत	شریمد بھاگوت	७. ब्रह्मवैवर्त	برہم ویورت	१३. कूर्म	کرم
२. मत्स्य	متسیہ	८. अग्नि	اگنی	१४. वामन	وامن
३. भविष्य	بھویشیہ	९. स्कन्ध	اسکندھ	१५. वराह	وراہ
४. मारकण्डेय	مارکنڈے	१०. विष्णु	وشنو	१६. गरुड	گروڈ
५. ब्रह्म	برہم	११. शिव	شیو	१७. पद्म	پدم
६. ब्रह्माण्ड	برہمانڈ	१२. नारद	نارد	१८. लिंग	لنگ

दर्शन : (Philosophy) : فلسفہ

		रचयिता	رچیتا			रचियता	رچیتا
वैशेषिक	ویشیشک	काण्ड	کانڈ	योग	یوگ	पतंजलि	پتنجلی
सांख्य	سانکھیا	कपिल	کپل	पूर्व मीमांसा	پُروميمانسا	जेमिनि	جیمنی
न्याय	نیائے	गौतम	گوتم	उत्तर मीमरंसा (वेदांत)	اُتر میمانسا	वाद्रायण	وادراین

गीता: گیتا (महाभारत के भीष्म पर्व के अध्याय **25** से 42, कुल **18** अध्याय, **700** श्लोक) (مہابھارت کے بھیشم پرو کے ادھیائے 25 سے 42 کُل 18 ادھیائے، 700 شلوک)

अन्य: دیگر

श्रुति شروتی

वेद وید

(अपौरुषेय, ईश–वाणी, स्वत: प्रमाण)

First published around 1890 by Maxmuller

रग वेद رگ وید	यजुर्वेद یجروید	साम वेद سام وید	अथर्व वेद اتھروید
ऋगवेद	यजुर्वेद	साम वेद	अथर्व वेद
मंडल 10 منڈل	अध्याय 40 ادھیائے	मंत्र 1875 منتر	काण्ड 20 کانڈ
सूक्त 1028 سوکت	मंत्र 1975 منتر		सूक्त 730 سوکت
मंत्र 10589/10600 منتر			मंत्र 5977 منتر

उपवेद اُپ وید

आयुर्वेद آیُروید	धनुर्वेद دھنُروید	गांधर्ववेद گاندھروید	अर्थशास्त्र ارتھ شاستر
(Medicine)	(Sc. of war)	(Sc. of music)	(Economics and Political Science)
(میڈیسن)	(سائنس آف وار)	(سائنس آف میوزک)	(اکنامکس اینڈ پولیٹکل سائنس)

वेदांग ویدانگ

शिक्षा (तलफ्फज) شکشا	व्याकरण دیاکرن	छन्द چھند	निरुक्त (Philology) نرکت	ज्योतिष جیوتش	कल्प
पाणिनि	पाणिनि	पिंगलाचार्य	यास्क یاسک	गर्ग گرگ	हर समुदाय के अलग है ।
پانی	پانی	پنگلاچاریہ			کلپ ہر فرقے کے الگ ہیں

उपनिषद اُپنشد

बहुत हैं । १०८ प्रमाणिक माने जाते हैं । १२ मशहूर हैं ।

بہت ہیں۔ ۱۰۸ مستند مانے جاتے ہیں۔ ۱۲ مشہور ہیں۔

१. ईषोपनिषद ارشواُپنشد	५. मुण्डक مُنڈک	९. छान्दोग्य (आवागमन) چھاندوگیہ (آواگمن)
२. केनोपनिषद کینواُپنشد	६. माण्डूक्य مانڈوکیہ	१०. बृहदारण्यक درہدارنیک
३. कठोपनिषद کٹھواُپنشد	७. ऐत्रेय ایترے	११. कौषेतकी کوشیتکی
४. प्रश्न پرشن	८. तैत्रेय تیترے	१२. श्वेताश्वतर شویتاشوتر

ब्राह्मण براہمن

18 हैं । शतपथ ब्राह्मण और गोपथ ब्राम्हण मशहूर हैं ।

۱۸ ہیں شتپتھ براہمن اور گوپتھ براہمن مشہور ہیں۔

आरण्यक آرن یک

18 हैं । हर ब्राह्मण ग्रंथ के समानान्तर एक आरण्यक है ।

۱۸ ہیں براہمن گرنتھ کے ساتھ ایک آرن یک ہے۔

वानप्रस्थों (जंगल की जिन्दगी इखतियार करने वालों के लिये हैं ।

وان پرستھوں (جنگل کی زندگی اختیار کرنے والوں کے لئے ہیں۔)

ویدوں میں توحید वेदों में एक ईश्वरवाद

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश:-----(य. ३२:३)

उसकी कोई प्रतिमा नहीं है, उसके नाम (का.स्मरण ही) सब से महान यश है ।

ترجمہ: اس کی کوئی شبیہ نہیں ہے اس کا ذکر ہی بڑی نیکی ہے (یجروید۔ ۳۲:۳)

He has no figure (the remembrance of) whose Name (remembrance) is the greatest virtue,

स: एष एक एकावंदक एव (अ. १३:४:१२)

केवल वह एक ही स्वयं से (बिना जन्म लिये) अकेला विद्यमान है ।

ترجمہ: صرف وہ ایک ہی خود سے (بغیر جنم لئے) اکیلا موجود ہے۔ (اتھروید۔ ۱۳:۴:۱۳)

Only He is One, who by Himself (without being born to any one) alone is present.

य एक इत्तमुष्टुहि (ऋ. ६:४५:१६)

वह एक ही है उसी की प्रशंसा करो ।

ترجمہ: وہ ایک ہی ہے اسی کی حمد کرو۔ (رگ وید۔ ۶:۴۵:۱۶)

He is One only. Praise only Him.

मा चिदन्यद्वि शंसत----(ऋ. ८:१:१)

उस के सिवा किसी और की उपासना न करों ।

ترجمہ: اس کے سوا کسی غیر کی عبادت نہ کرو۔ (رگ وید۔ ۸:۱:۱)

Do not deify anyone but Him.

अकायम (य. ४०:८)

उस का शरीर नही है ।

ترجمہ: اس کا جسم نہیں ہے۔ (یجروید۔ ۴۰:۸)

He is bodyless

न ममार न जीर्यत----(अ. १०:८:३२)

वह न कभी मरता है और न कभी बूढा होता है ।

ترجمہ: وہ نہ کبھی مرتا ہے اور نہ کبھی بوڑھا ہوتا ہے۔ (اتھروید۔ ۱۰:۸:۳۲)

He neither dies nor grows old.

तस्य ते भक्तिवांस: स्थाम----(अ. ६:७९:३)

हे ईश्वर हम तेरे ही भक्त हों ।

ترجمہ: اے خدا ہم تیرے ہی بندے ہوں۔ (اتھروید۔ ۶:۷۹:۳)

O God, let us be only Your devotees.

एक एव नमस्यो विक्ष्यीवड्य:----(अ. २:२:१)

एक ईश्वर ही उपासना के योग्य और सारी सृष्टि मे प्रशंसा के योग्य है ।

ترجمہ: ایک خدا ہی عبادت کے لائق اور سبھی مخلوقات میں حمد کے قابل ہے۔ (اتھروید۔ ۲:۲:۱)

Only One God is worthy of worship and reverence by all creation.

"अन्थन्तम: प्र विशन्ति येऽसभूतिमुपासते । ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याꣳ रता:।।" (य०:४०:९) जो अंसम्भूति (१) अर्थात प्रकृति रुप जड पदार्थ (अग्नि, मिटटी, वायु आदि) की उपासना करते हैं, वे अज्ञान अंधकार में प्रविष्ट होते हैं और जो 'सम्भूति' अर्थात इन प्रकृति पदार्थे के परिणामस्वरुप सृष्टि (पेड पौधे मूर्तियां आदि) में रमण करते हैं वे उससे भी अधिक अंधकार में पडते हैं ।

इससे अधिक स्पष्ट निषेध और क्या हो सकता है?

"संप्रक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन्" (गीता ६:१३)

स्वयं अपनी ही नाक के अग्र भाग पर इस प्रकार दृष्टि जमाओ कि किसी अन्य दिशा में न देख सको । गीता ने उपासना के समय स्वंय अपनी नाक के अग्र भाग पर ध्यान केन्द्रित करने को कहा था और साथ ही अन्य किसी भी दिशा में अवलोकन करने से मना भी किया था । नाक पर ध्यान जमा कर हम सोचें कि इस सुन्दर मूर्ति के निर्माता की महिमा अद्वितीय है । वही हमारा कर्त्ता है । श्वास से वह हमें पाल रहा है । भोजन पानी के विषय में तो यह भ्रान्ति मन कें आ सकती है कि माता–पिता या अन्य लोग देते हैं परन्तु श्वास का भोजन जिस के बिना क्षण भर भी जीवन का अस्तित्व बाकी नही रह सकता, सोते जागते हभें कौन प्रदान करता है? निश्चय ही वही हमारा पालनकर्त्ता है। एक दिन इसी नाक से आने वाले श्वास को रोक कर वही इस मूर्ति को तोड देगा । वही हमारा संहर्ता है। इस श्वास को प्रदान करने वाले का चिन्तन तथा उसे धन्यवाद अर्पित करना ही विश्वास है। ऋषियों ने वेद और गीता की बताई इस उपासना विधि के लिये 'साष्टांग' अवस्था प्रस्तावित की । वर्तमान में 'साष्टांग' का सही तरीका भी भूल गए हैं । वे डाण्डवत प्रणाम को साष्टांग समझने लगे । साष्टांग शब्द स्वयं अपनी उचित अवस्था की व्याख्या है । साष्टांक=स+अष्ट+अंग अर्थात अष्ट अंगों सहित ।

जिस आसन में शरीर के आठ अंग भाग लें वह साष्टांग है । दो पैरों के पंजे, दो घुटने, दो हाथ, नाक व माथा. ये आठ अंग धरती पर टेक कर साष्टांग होता है।

साष्टाँग (सजदा) → धरती को स्पर्श करने वाले ८ अंग २ पैरों के पंजे + २ घुटने + २ हाथ + १ नाक + १ माथा

इस के अतिरिक्त कोई अन्य अवस्था ऐसी सम्भव नही है जिस में शरीर के आठ अंग भाग लें । यही वह आसन है जिसमें अपनी नाक के सिवाय किसी अन्य दिशा में देखना सम्भव नही है । उल्लेखनीय है कि जब गीता ने योगी (ईश्वर से जुडने वाले) को अपनी नाक के अग्र भाग के अतिरिक्त किसी भी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने से मना किया था तो ध्यान करने के लिये मुर्ति न केवल अनावश्यक होगई बल्कि उसका स्पष्ट निषेध होगया ।

अपनी साकार देवकृत मूर्ति की नाक पर ध्यान जमा निराकार ब्रह्म का चिन्तन करना ही साकार व निराकार उपासना का सामंजस्य है ।

अथर्ववेद 20:127:1

इदं जना उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते ।
पष्टिं सहस्ना नवर्ति च कौरम् आ रुशमेषु दद्महे ।।

हे मनुष्यो, आदर से सुनो !
नराशंस की प्रशंसा की जाएगी ।
(उस) कौरम (शरणार्थी) को
साठ हजार नव्वे
शत्रुओं के बीच हम पाते हैं ।

अथर्ववेद 20:127:2

उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो वधूमन्तो द्विर्दश ।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाणा उपस्पृश:।।

चिसकी सवारी ऊंट (है),
बीस ऊंटनियों सहित,
(उसके) महान रथ की तेज रफतारी
आकाश को छूते हुए नीचा दिखती है ।

अथर्ववेद 20:127:3

एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रज:।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम् ।।

उस (ईश्वर) ने (उस) उपजाऊ
(पुरूष) को प्रदान किया है –
सौ दीनार (स्वर्ण मुद्राएं), दस मालाऐं,
तीन सौ घोडे (और) दस हजार गाएं

That Prophet

यज्ञं पृच्छाम्यवमं स तद्दूतो विवोचति ।

क्य ऋतं पूव्यं कस्तद्बिभर्ति नुतनो वित्तं मे रोदसी ।। (ऋग. १:१०५:४)

पृच्छामि = पूछता हूं अवमं = सब से नीचे, सब से बाद यज्ञं = यज्ञ को

तत् = उसको स: दूत: = वह दूत विवोचति = स्पष्ट करता है

पूर्व्य = पुराने समय का ऋतं = सद्मार्ग क्व = कहाँ गतं = गया

क: = कौन तत् = उसको नूतन: = नया बिभर्ति = धारण करता है

रोदसी = आकाश पृथ्वी मे = मेरे अस्य = इसको वित्त्म् = जानो, ध्यान दो

Joh:1:19:

And this is the record of John, when the Jews sent Priests and Levites from Jerusalem to ask him, Who are you ?

Joh:1:20:

And he confessed, and denied not; but confessed, I am not the Christ.

Joh:1:21:

And they asked him, What then? Are you Elias? And he said, I am not. Are you that prophet? And he answered, No.

इन्द्रास्त्रोमा दुष्कृती वव्रे अन्तरनारम्मणे तमसि प्र विध्यतम् ।
यथा नात: पुनरेकश्चनोदयात्.....।। (ऋग्वेद ७:१०४:३)
"हे शक्तिमान ईश्वर, दुष्कर्मियों को ऐसे दुखदायी नरक में प्रविष्ट कीजिये जिसमें कोई आलम्बन नही है जिससे कि वहाँ से कोई एक भी फिर कभी न लौटे..."।

यत्र ज्योतिरजसं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम् ।
तस्मिव्मांधेहि पवमानामृते लोके अक्षिते...।। (ऋग्वेद ९:११३:७)
"जहाँ निख्तर ज्योति का प्रकाश होता है, जिस लोक में सुख ही सुख है, हे पवमान, मुझे उस क्षय रहित अमर लोक में रखे"।
यत्रानन्दाश्च भोदाश्च प्रमुद आसते । कामस्य यंत्राप्ता: कामास्तत्र माममृतं कृधि...।।
(ऋग्वेद ९:११३:११)
"जहाँ आनन्द और हर्ष है, जहाँ आनन्दित और हर्षित विराजमान है और जहाँ सभी कामनाए पूरी होती है वहाँ मुझे अमर करे"।
ऋतस्य पन्षामनु पश्य साध्वगिंरस: सुकृतो येन यन्ति । तेभिर्याहि पथिभि: स्वर्ग यत्रादित्या मधु भक्षयब्ति तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व ।। (अथर्ववेद १८:४:३)
"सत्य के मार्ग पर निख्तर नजर रख, जिस (मार्ग) से महाविद्वान सुकमी चलते है जिन अदिति भवु (रुपी आनन्द)का सेवन करते है उन्ही रास्तो पर चलता हुआ उस दुख्यहित तीसरे स्वर्ग में निवास कर"।
अनस्था: पूता: पवनेन शुध्दा: शुचय: शुचिमपि यन्ति लोकम् । नैषा शिश्न प्र दहति जातवेदा: स्वर्ग लोके बहु स्त्रैणमेषाम् ।। (अथर्ववेद ४:३४:२)
"शुद्धकर्ता द्वारा पवित्र होकर वे (सद्कर्मी) हड्डी रहित (अभौतिक शरीर बन कर) ज्योतिर्मय लोग उज्जवल लोक को जाते है। इनके भोग साधन इन्द्रिय को अग्नि भस्म नही करते । स्वर्ग-लोक में इन्हे बहुत आनन्दमय भोग प्राप्त है"।
घृतह्रदा मधुकूला: सुरोदका: क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना ।
एतास्ता धारा उपयन्तु सर्वा: स्वर्गेलोके मधुमत् पिन्वमाना ।
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणी: समन्ता: ।। (अथर्ववेद ४:३४:६)
"मधु के किनारों वाले घृत युक्त सरोवर, सुरा, दुध, दही, पानी से परिपूर्ण, सब अत्यन्त मिठास वाली धाराएं तुझको स्वर्ग-लोक में प्राप्त हों। कमल के फूलों की संपुर्ण झीलें तेरे पास आए"।
पुन:पुन:जायमाना पुराणी समानं वर्णमभि शुम्भमाना ।
श्वध्नीव कृत्नुर्विज आमिमाना.....।। (ऋग्वेद १:९२:१०)
"बार-बार उत्पन्न होने का वर्णन प्राचीन काल जैसा किया जाता है। पापियों के समान इस प्रकार मानने वालों को विचित करो....."।

अनस्था: पूता: पवनेन शुद्धा: शुचय: शुचिमपि यन्ति लोकम् ।
नैषा शिश्न प्रदहति जातवेदा: स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेषाम् ।। (अथर्ववेद ४:३४:२)

"शुद्धकर्ता द्वारा पवित्र होकर वे (सद्कर्मी) हड्डी रहित (अभौतिक शरीर बन कर) शुद्ध ज्योतिर्मय लोग उज्जवल लोक को ही जाते हैं। इनके भोग साधन इन्द्रिय को अग्नि भस्म नही करते । स्वर्ग-लोक में इन्हें बहुत आनन्दमय भोग (प्राप्त) है"।

پاک کرنے والے کے ذریعہ پاک ہوکر وہ (نیکوکار) بغیر ہڈی والے (غیر مادّی جسم بن کر) پاکیزہ نورانی لوگ روشن جہان کو ہی جاتے ہیں۔ اُن کے لذّت محسوس کرنے والے حواس کو آگ نہیں جلاتی۔ جنّت کی دنیا میں انہیں بہت خوشیوں بھری نعمتیں حاصل ہیں۔
(اتھروویدا:۳۴:۴)

घृतहदा मधुकूला: सुरोदका: क्षीरेण उदकेन दध्ना ।
एतास्त्वा धारा उपयन्तु सर्वा: स्वर्गेलोके मधुमत् पिन्वमाना ।
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणी: समन्ता: ।। (अथर्ववेद ४:३४:६)

"मधु के किनारों वाले घृत युक्त सरोवर, सुरा, दुग्ध, दही, पानी से परिपूर्ण, सब अत्यन्त मिठास वाली भर कर बहती हुई वे धाराएं स्वर्ग-लोक में प्राप्त हों । कमल के फूलों की संपूर्ण झीले तेरे पास आएं"।

شہد کے کناروں والے گھی سے بھرے تالاب، شراب، دودھ، دہی، پانی سے لبریز، سب انتہائی مٹھاس بھری وہ ندیاں تجھے جنت کی دنیا میں حاصل ہوں۔ کمل کے پھولوں کی پوری پوری جھیلیں تیرے پاس آئیں۔ (اتھروویدا:۳۴:۶)

पुन:पुन[1] जायमाना[2] पुराणी समान[3] वर्णम[4] शुम्भाना[5]
श्वघ्नीव[6] कृत्नुर्विज[7] आमिनाना[8]....।। (ऋ १:९२:१०)
"बार-बार[1] उत्पन्न होने का[2] वर्णन[3] प्राचीन काल जैसा [4] प्रकाषित किया जाता ह[5]
पापियों के समान[6] इस प्रकार मानने वालों को[7] विजित करो[8]"।

بار بار 1 پیدا ہونے کا 2 بیان 4 زمانہ قدیم کی طرح 3 مشتہر کیا جاتا ہے 5
گنہگاروں کی طرح 6 ایسا ماننے والوں کو 8 مغلوب کرو 7

समस्त मानव जाती एक माता पिता कि सन्तान

यह बात सुनने मे भले ही आश्चर्यचनक हो किंतु हम जरा सा विचार करें तो पता चलेगा कि जैसे जैसे हम समय कि रेखा पर पीछे जाएँ, तो इस धरती पर मानव जाती कि संख्या कि संख्या कम होते जाती है और फिर यह संख्या घट कर सिर्फ एक पुरुष और एक स्त्री पर रुक जाती है।

सभी ग्रन्थों में उनका नाम आदिम और हव्वावति बताया गया है।

अर्थात सर्व मानव जाति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, एक ही माता पिता कि सन्तान है।

इस नाते हम सब आपस मे भाई भाई हुए।

और इसी नाते हमारा यह कर्तव्य है कि हम आपस मे एक दूसरे के लिये लाभदायक होने का प्रयत्न करे।

इस संदर्भ में हमारा ये प्रयास है कि हम अपने सभी भाईयों को उस निराकार ईश्वर के बारे मे जानकारी दे जिस ने हम सब को एक स्त्री और पुरुष से पैदा किया ताकि हम सब उस को जाने और उसकी उपासना करे।

जीवन का सुख दु:ख और ईश्वर का नियम

अगर हम ईश्वर के नियमो का पालन करेंगे तो जीवन में सुख आयेगा और उसके नियमो का उलंघ्न करने पर हमारे जीवन मे दु:ख आता है।

प्रथम नियम

सब से पहला नियम यह है कि केवल उसी एक ईश्वर की उपासना की जाएगी उस के अलावा किसी और की उपासना नहीं की जायगी.

ईश्वर एक ही क्यों

यदि किसी से पूछा जाये के ईश्वर कितने है तो हर व्यक्ति यही उत्तर देगा के ईश्वर एक ही है।

ये सिर्फ बोलने की बात नही है अगर हम जरा सा विचार करे तो हम इसी नतीजे पे पहुँचेंगे के ईश्वर को एक हि होना चाहिये, क्यों कि किसी स्कूल में २ प्रिंसिपल नही होते, किसी गाडी के २ ड्रायवर नही होते, किसी देश के २ प्रधानमंत्री नही होते, क्योंके अगर १ से ज्यादा शक्तिशाली पद होंगे तो हर कोई अपनी मन मानी कर लेगा, तो इस तरह धरती पर संतुलन कायम नही रहेगा।

तो इस से ये पता चला कि शक्तिशाली पद को एक हि होना चाहिये और ईश्वर से शक्तिशाली कौन हो सकता है?

इसी लिए तो ईश्वर एक ही है और उसे एक ही होना चाहिये।

ईश्वर की ही उपासना क्यों ?

चलिये हम एक उदाहरण पर विचार करते है। अगर एक व्यक्ति लंबे सफर पर समान के साथ पयदल चल रहा हो और पीछे से एक व्यक्ति बाईक या कार पर आए और पहले व्यक्ति को लिफ्ट दे दे और अपनी मंजिल तक पहुँचा दें तो क्या वो व्यक्ति जो पैदल चल रहा था उस लिफ्ट देने वाले का धन्यवाद नही करेगा ??

जरुर करेगा इतने से उपकार के लिए वो व्यक्ति धन्यवाद करने पर मजबूर हो गया, तो जरा विचार कीजिये, जिस ईश्वर ने हमे जीवन दिया हमारे जन्म से पहले माँ के गर्ब में हमारे भोजन का साधन किया, फिर हमारे जन्म के बाद माँ बाप दिये जिनका हमे प्रेम मिला, फिर उसने हमको यह किंमती आँखे दी जिस से हम देख सकते है, असली कींमत हमे तभी मालूम होगी जब हमसे ये छीन ली जाए, उसने हमे ये हाथ पैर दिए जिन से हम काम लेते है।

हमे यह बुद्धि दी जिससे हम विचार करते है।

हमे ये दिल दिया जिससे हम किसी से प्रेम करते है, किसी को खुश करते है, किसी का दिल तोड दे ते है, जिस से हम कुछ निर्णय लेते है। तो जरा विचार किजिये, क्या ये उचित होगा कि हम उस ईश्वर को उसके इतने सारे उपकार करने के बाद भी धन्यवाद न करे उसकी उपासना ना करे?

क्या किसी और कि उपासना उचित होगी?

एक उदहारण

एक व्यक्ति आपके गांव आया, आपके गांव वालों ने उसकी खुब सेवा की, उसको खाना दिया, पानी दिया, रहने को घर दिया, वो व्यक्ति एक हफ्ते तक आपके गांव में रहा और आपके सेवाओं का लाभ उठाया फिर जाते जाते उस व्यक्ति ने आपको छोडकर कर बाजू वाले गांव का धन्यवाद किया तो आपको कैसा लगेगा???

आपको बुरा लगेगा ना? और वास्तव मे ऐसा करना उचित नही होगा, तो जरा विचार कीजिये ईश्वर के उपकार जानने के बाद भी हम किसी और कि उपासना करेंगे तो क्या ये उचित होगा?

क्या ईश्वर को क्रोध नही आएगा? कही हम जाने अनजाने में ईश्वर के क्रोध को तो नही आमंत्रित कर रहे?

हम कभी पत्थरों की उपासना करने लगते ही, कभी पेडो की, कभी पहाडो की, और तो कभी इंसानों की उपासना करने लगते है।

जब की इंसान तो कमजोर होता है। उसे खुद ईश्वर की उपासना करनी चाहिएतो उस इंसान की उपासना करना कैसे उचित होगा?

दूसरा नियम

ईश्वर का दूसरा नियम यह है कि इस जीवन में अच्छे कर्म करना है । एक ईश्वर के ज्ञान के बाद सबसे बडा पुण्य माँ बाप की सेवा है । ईश्वर को ना जानना सबसे बडा पाप है । उसके बाद अगर हम माँ बाप की सेवा और आदर ना करे तो ये ईश्वर के नजदिक महा पाप है। सच बोलना, जुठ न बोलना, सबकी मदत करना, कभी ऐसा न हो कि आप तो पेट भर कर खाये और आप का पडोसी भूका हो ।

किसी भी व्यक्ति को देख कर अगर ये मालूम हो कि वह चिंतित है, परेशान है, तो उसकी समस्या का समाधान करना भी पुण्य का काम है। (आमाल सालेहा कि बात करे)

हमे यह जानना चाहिए के हमारे कर्मो का हिसाब लिया जायेगा । चाहे वो कितने भी छोटे या बडे हो।

यदि आपने अपने बच्चे को ५० रुपये दिए और उससे सामान लाने के लिए कहे तो उसके आने के बाद क्या आप उससे हिसाब नही लेंगे की वह चीज कितने में आई और कितने रुपए बचे है?

आप जरुर हिसाब लेगे..तो क्या वो ईश्वर जिसने हमे जीवन दिया, जीने के लिये वातावरण दिया, अनाज दिया, पानी दिया, बुद्धि दी, हाथ, कान, नाक, पैर दिए, ये जानने के लिए की हम इसका कैसे उपयोग करेगे? तो क्या वो ईश्वर इसका हिसाब नही लेगा? वो तो जरुर हिसाब लेगा..

तो फिर जिसने सिर्फ एक ईश्वर की उपासना की होगी और अच्छेकर्म किये होंगे तो उसके लिए सदा का स्वर्गीय जीवन होगा।

और जिसने नियमों का उलंघण किया उसके लिए इस जिन्दगी में भी अशांती होगी और मरने के बाद भी वो सदा नरक में रहेगा ।

और मेरे भाइयों वो नरक क्या है? वो ईश्वर की भडकाई हुई आग है । जिस सूरज को उसने बनाया, हम दोपहर में अपनी आँखों से देख नही सकते तो उसकी भडकाई हुई आग में हम कैसे जलना चाहेंगे?

तो क्यों ना हम इस की नाराजगी से बचने के लिए उसी एक ईश्वर की उपासना करें। और अच्छे कर्म के ताकि नरक से मुक्ति हो और स्वर्ग का आसिम जीवन हमे प्राप्त हो ।

तो जब हमने जान लिया की अब तक हम इस ईश्वर को छोडकर किसी और कि उपासना करके और बुरे कर्म करके महा पाप करते रहे। तो अब हमें उस ईश्वर से अपने पापों की क्षमा

मांगनी चाहिए।
ईश्वर ने हमे पापों की क्षमा मांगने का तरीका और प्रर्थना करने का मार्ग आपने ग्रंथो में बताया है।
जिसे हम साष्टांग कहते है। 'स' यानी सहित 'अष्ट' यानी आठ और 'अंग' यानी शरी के भाग शरीर के ८ अंगों सहित उस अजन्मे ईश्वर को नमन करना। इस पोजिशन में हम ईश्वर के सबसे करीब होते है। तो साष्टांग करते हुए ईश्वर से अपने पापों की क्षमा मांगे,
की ये ईश्वर तू हमारे पापों को क्षमा कर दे।
हम ने अब तक तुझे छोडकर पत्थर पेड, पहाड और इंसानो की उपासना करके अपने ऊपर बहुत बडा अत्यचार किया है।
मगर अब हम तेरी शरण मे आते है।
अब हम तेरी उपासना करेंगे, तुझे छोडकर किसी और की उपासना नही करेंगे। तू हमे सीधा और सच्चा मार्ग दीखा, जो तेरी और जाता है।
तू हमे स्वास्थ्य दे। तन और मन की शांति दे। और हमे धनी कर दे । ताकि हम लोगो की मदत कर सके।
तो मेरे भाइयों साष्टांग करते समय सामने न कोई सूरत ना हो। न कोई मूरत हो। अपने मन मे एक निराकार ईश्वर का ध्यान करते हुए जो प्रार्थना करेंगे वो स्वीकार होंगी।
तो इस तरह ईश्वर के नियमों का पालन करके हमे शांति प्राप्त हो सकती है।
जगत गुरु अंतिम प्रषित मोहम्मद **(pubh)** के कथन के माध्यम से कुछ अच्छी बाते भी आपके सामने रखनी है। (हदीस बयान करे)
हमने अपने चिंताओं को और पिडावों को ईश्वर से बडा समज लिया है।
जब के ईश्वर तो सर्व शक्तिमान है। उसके लिए कुछ भी असंभव नही है। चाहे परीक्षा में सफलता हो या जॉब नही मिल रही हो।
बेटी की शादी नही हो रही हो तो उस ईश्वर की शरण मे आकर ही समस्याओं का समाधान हो सकता है।
अगर सारे जग को जितना है तो उस एक से हार जाओ। अपने अनमोल सर को उस ईश्वर के सामने समर्पित कर दी जिये।
यही कुछ बाते आप के सामने रखनी थी । आप विचार करेंगे तो आप को भी बात समझ मे आयगी।
बहुत बहुत धन्यावाद आप ने अच्छे से बात को सुना आप से निवेदन है कि विचार करें।
बहुत बहुत धन्यावाद